IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJARASEM.2023.1004049 |

फिल्म लेखन और हिन्दी

डॉ. मनोज कुमार शर्मा

सहायक आचार्य 'VSY' हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, पूगल
बीकानेर (राजस्थान)

सारांश

फिल्में मीडिया का एक सशक्त माध्यम है। आज केबल के द्वारा टीवी घर–घर में पहुँच गया है, फिर भी फिल्मों की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है। एक अच्छी फिल्म देखने के लिए सिनेमाघरों में आज भी भीड़ उमड़ी रहती है। फिल्मों के लिए लेखन और फिल्म पत्रकार बनना दरअसल एक चुनौती भरा काम है। दोनों में लगभग एक फिल्मकार (निर्देशक) की तरह की समग्र जानकारी चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यवश हिन्दी पत्रकारिता में फिल्म–पत्रकारिता या फिल्म–मीडिया को गंभीरता से नहीं लिया गया है। वैसे अंग्रेजी सहित दूसरी भारतीय भाषाओं की स्थिति भी संतोषप्रद नहीं है। समझा जाता है कि फिल्मों पर राय देना बड़ा आसान है। अभिनेताओं अभिनेत्रियों पर लिखना बहुत ही आसान है। उन्होंने इंटरव्यू करने में कोई मुश्किल नहीं होती है, आदि–आदि।

मूल शब्द : अभिनय, छायांकन, पटकथा, संवाद

प्रस्तावना

फिल्म लेखक के लिए कैसा लेखक चाहिए? इसकी चर्चा करते हुए डॉ. सुशील सिद्धार्थ ने कहा है – "फिल्म लेखन में उत्सुक व्यक्ति को प्रारंभिक चरण में ही यह समझ लेना चाहिए कि इस क्षेत्र में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक दक्षता का योग अत्यंत आवश्यक है। कारण यह है कि पाँच दस पृष्ठों की कहानी या कल्पना को लंबी पटकथा में ढ़ालने हेतु उसमें कतिपय बातें जोड़नी–घटानी पड़ती है। ऐसा करते समय, पर्दा माध्यम (फिल्म निर्माण की तकनीक) के कई तत्वों को ध्यान में रखना पड़ता है, जैसे– बजट, अभिनय, छायांकन, स्थान, वातावरण दर्शकों की मानसिकता आदि"।

आम तौर पर फिल्मों या टेलीविजन में पटकथा कोई लिखता है और संवाद कोई। कुछ लेखक ऐसे होते है, जो दृश्य निर्माण के विशेषज्ञ होते है, तो कुछ संवादों के। स्व.राही मासूम राजा, कमलेश्वर जैसे कुछ लेखक ऐसे रहे हैं, जिन्होंने संवाद–लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त की है। सलीम–जावेद के बारे में यह कहा ही जाता है कि सलीम स्क्रीन प्ले और जावेद संवादों के विषय–विशेषज्ञ रहे है। वैसे अधिकांश पटकथा लेखक संवाद और

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJARASEM.2023.1004049 |

पटकथा दोनों ही लिखते है। फिल्म विषय विशेषज्ञ हरमल सिंह ने संवादों के बारे में लिखा है–"अच्छे अदाकार तो श्रेष्ठ संवादों के भूखे रहते हैं। अच्छे संवादों से उनका चरित्र निखरता है, बोलने में आनंद आता है दर्शकों में भी वह संवाद आनंद पैदा करने में सक्षम रहता है और उसकी जुबान पर चढ़कर फिल्म की लोकप्रियता बढ़ाता है। संवादो में तारतम्यता रहनी चाहिए। संवादों में आम मुहावरों, लोकोक्तियों, लतीफेबाजी, प्रतीकात्मक भाषा, द्विअर्थी वाक्यांशों, शेरो–शायरी आदि का धड़ल्ले से प्रयोग किया जा सकता है। सिर्फ वे दृश्य के साथ पात्र के साथ सटीक बैठने चाहिए।"

फिल्म लेखन में हिन्दी संवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। असगर वजाहत ने फिल्म एवं टेलीविजन के संवाद के महत्व एवं लेखन को इस प्रकार रेखांकित किया है – "सबसे पहले यह ध्यान रखना चाहिए कि संवाद पात्रानुकूल हो। जैसा पात्र हो संवाद वैसा ही होना चाहिए। संवाद में कम–से–कम शब्दों का प्रयोग करना चाहिए अपने कुछ प्रमुख पात्रों को पहचान देने के लिए "तकिया कलाम" का इस्तेमाल भी करना चाहिए। फिल्मों में तो नायक–नायिकाओं विशेषकर खलनायकों को विशिष्टता प्रदान करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरणतः फिल्म 'मिस्टर इंडिया' मैं खलनायक बात–बात में कहता है– 'मोगेबों खुश हुआ' या कांति में प्रेम चौपड़ा कहता है– 'शंभू का दिमाग दोधारी तलवार है।'3 ध्यान रखिए कि इस तरह संवाद आप एक पात्र में भरेंगे तो वह खूब चलेगा, दो पात्रों में देंगे तो भी चलेगा, पर अगर सभी पात्रों में भरेंगे, तो बिलकुल नहीं चलेगा। हिन्दी फिल्म लेखन का मूल आधार उसकी कहानी या कथानक है। इस सम्बन्ध में प्रो.रमेश जैन ने लिखा है–"हिन्दी फिल्म का कथानक इस प्रकार का होना चाहिए, जिसे दर्शक सरलता से समझ सके, फिल्म दृश्य एवं श्रव्य दोनों है, अतः इसमें संवाद की अपेक्षा कथानक और कार्य व्यापार पर लेखक को अधिक जोर देना चाहिए। फिल्म और नाटक में संवेगात्मक तीव्रता पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।"4

निष्कर्ष :

इस प्रकार कहा जा सकता है कि फिल्म लेखन सतत् एक अभ्यास प्रक्रिया है जिसमें शनै–शनैः निखार आता है। फिल्म लेखन और टेलीविजन लेखन को विश्वविद्यालय के जनसंचार पाठ्यक्रमों में आज भी विशेष महत्त्व नहीं दिया गया है। आज भी अधिकांश विश्वविद्यालयों के पास अपने स्टूडियों नहीं है और न ही प्रशिक्षण देने वाले विषय विशेषज्ञ। यह आश्चर्य की बात है कि जिस हिन्दी भाषा में लगभग एक हजार फिल्में प्रतिवर्ष बनती हों और टेलीविजन के कार्यक्रम लगातार बढ़ते जा रहे हो, उस भाषा में फिल्म लेखन और टेलीविजन लेखन पर न तो पुस्तकें हैं और न पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रमों में उनका अनिवार्य प्रश्न–पत्र के रूप में समावेश।

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJARASEM.2023.1004049 |

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. सुशील सिद्धार्थ – मीडिया लेखन, पृष्ठ– 108
2. श्री हरमल सिंह फिल्में कैसी बनती है? – पृष्ठ 70
3. श्री असगर वजाहत – टेलीविजन लेखन–पृष्ठ– 48
4. प्रो. रमेश जैन – प्रयोजनापरक हिन्दी पृष्ठ– 207

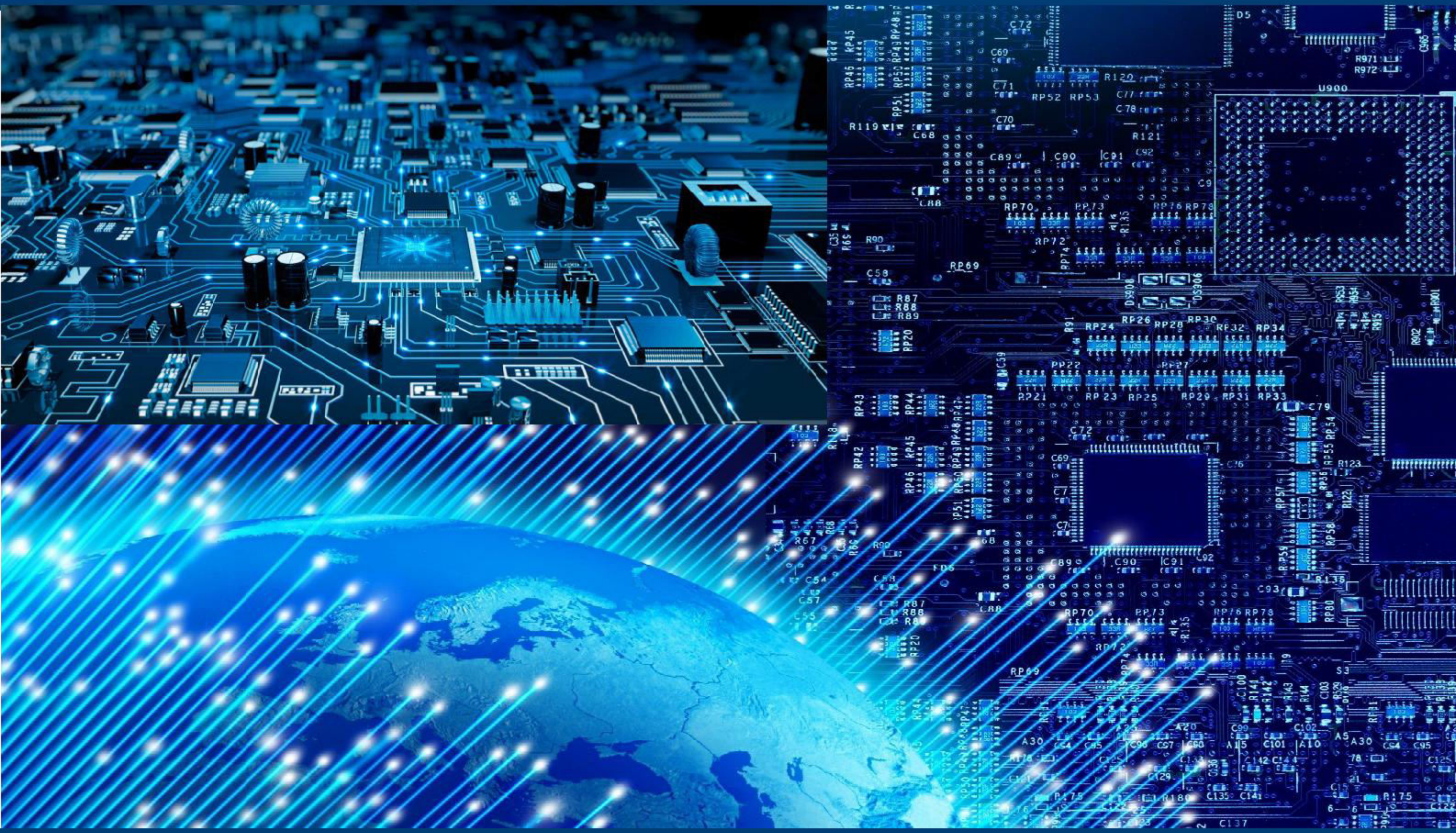

IJARASEM

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com